गैर सरकारी संगठन में समाजिक कार्यकर्त्ता की भूमिका पर

निशा झँवर

प्रस्तावना :

भारत विविधताओं का देश है। यह देश अत्यन्त प्राचीन व विशाल है। प्राचीन काल से ही समाज कार्य व उनसे जुड़ी समस्याएं भी चली आ रही है जो हमारें समाज व व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती है। प्राचीन काल में समाज कार्य, दान, धर्म परोपकार आदि से सम्बधित था। लेकिन वर्तमान समय में समाज कार्य व्यवसायिक रूप ले चुका है।

समाज कार्य की बढती माँग के कारण स्वतंत्रता के पश्चात् अनेक देशों में गैर पश्चात् अनेक देशों में गैर सरकारी संगठनों का विकास व निर्माण हुआ। जिसके अर्न्तगत अनुभवी प्रशिक्षित व्यक्ति सामाजिक कार्यकर्त्ता बनकर समाज कार्य करते है। गैर सरकारी संगठनों के अन्तर्गत सामाजिक कार्यकर्ता सेवार्थी की सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं के समाधान हेतु कार्य करते है एवं अन्य कार्यों में भी सहयोग दे रहे है। जैसे–प्रोढ़ शिक्षा को बढ़ावा स्त्री शिक्षा पर बल विकलांगों व वृद्धों की सहायता आदि हेतु कार्य कर रहे है।

समाज कार्य व्यक्ति की मनो सामाजिक समस्याओं के निदान का एक वैज्ञानिक तरीका है। गैर सरकारी संगठनों को विदेशों से भी आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। जिसके द्वारा सामाजिक कार्यकर्त्ता सेवार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में अधिक से योगदान दे रहे है।

इस प्रकार बी• जी• खैर (1947) के अनुसार सामाजिक कार्यकर्त्ता का उद्देश्य सामाजिक अन्याय को दूर करना, विपत्तियों को हटाना, दुखों को रोकना, समाज के कमजोर वर्गों को उन्नति की ओर अग्रसर करना, परिवारों के पुर्नवास आदि है।

इस प्रकार क्लार्क के अनुसार :– सामाजिक कार्यकर्त्ता सामाजिक कार्यकर्त्ता सामाजिक पर्यावरण में आवश्यकताओं की संतुष्टि करने में व्यक्ति की सहायता करने का प्रयास करता है कि जहाँ तक हो सके उन बाधाओं को दूर किया जाए जो सेवार्थी के सर्वोत्तम विकास के कार्यों में आती है।

गैर सरकारी संगठन अलाभकारी संगठन एवं एक ऐसा सामाजिक संगठन होता है जिसके अर्न्तगत सामाजिक कार्यकर्ता व्यक्तियों का समूह समुदाय,नागरिक, स्वैच्छिक कार्यकर्त्ता आदि जन सेवक समाज क कल्याण और विकास के लिए कार्य करते है। यदि व्यक्तियों का समूह या कोई समुदाय सामाजिक मुद्दे पर कार्य करना चाहता है। तो वह बिना पंजीकरण की हुई स्वयं सेवी संस्था में आता है। गैर सरकारी संगठन पंजीकृत होते है।

स्वयं सेवी संस्था संगठित स्वदेशी समूह द्वारा स्थानीय राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर विकास कार्यों में सहयोग देने वाले निजि अभिकरण होते है स्वयं सेवी संस्थाऐं सामाजिक आर्थिक,राजनैतिक स्तर पर पिछड़े वर्गों की उन्नति व विकास के लिए कार्य करती है ताकि समाज में लोगों का जीवन का लाभ उठा पायें।

स्वयं सेवी संगठन एक ऐसा संगठन है जिन पर पूर्ण रूप से सरकार का हस्तक्षेप होता भी है, और नहीं भी। स्वयं सेवी संस्थाऐं समाज में लोगों को उनके कानून और अधिकार के हक की लड़ाई में सहयोग प्रदान करती है।

गैर सरकारी संगठनों का कार्य कहीं अधिक कठिन एवं दुष्कर है जितना आम तौर पर माना जाता है। निजी और सार्वजनिक क्षेत्र से इन संगठनों में आने वाले प्रबंधकों और कर्मचारियों की भी यही मान्यता है।

गैर सरकारी संगठनों के प्रबंधकों के प्रशिक्षण को आधिकाधिक रूप सविशिष्ट कार्य माना जाता है कुछ देशों में तो इस कार्य के

लिए अभिकरणों का आरम्भ हुआ। अवसर ये अभिकरण भी गैर सरकारी संगठन ही होते है। अधिकाधिक रूप से संगोष्ठी सदस्यों, कार्यकर्त्ताओं और लाभार्थियों को विशिष्ट मानव संसाधन के विकास के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। यह इस मान्यता पर आधारित है कि एक प्रशिक्षित और प्रभावशाली संगोष्ठी का होना उतना ही आवश्यक है जितना योग्य व सक्षम लाभार्थियों का होना।

भलीभाँति प्रशिक्षित और जानकारी रखने वाले कार्यकर्त्ता अपने कर्मचारियों पर अपेक्षाकृत कम निर्भर होते है। वे अपने कमचारियों को पूर्ण रूप से जवाब देही बनाते है। गैर सरकारी संगठनों द्वारा की गई इस मानव संसाधन विकास व प्रशिक्षण सम्बन्धी पहल कदमियों में से कुछ अर्न्तराष्ट्री रूझान वाली पहल कदमियाँ है। कुछ अन्य संगठन गैर सरकारी संगठनों को शोध व परामर्श सेवाएं प्रदान करते है। साथ ही उनके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन भी करते है। इसके अलावा अब अधिकाधिक गैर सरकारी संगठन प्रशिक्षण समय व संसाधन खर्च कर रहे है। उनके पहल सहायता एवं भागीदारी से अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। पर इन सबके बावजूद अवसर ही यह विचार व्यक्त किया जाता है। अभी भी गैर सरकारी संगठन और उनके कोषदाता इस कार्य पर बहुत कम निवेश कर रहे है।

अन्य क्षेत्रों की तरह गैर सरकारी संगठनों में भी मानव संसाधन विकास की शुरूआत सही योग्यता और प्रतिमा वाले कमचारियों को अपनी और आकर्षित करने से होती है।

इसका अर्थ यह है कि वे उचित वेतन और सेवा स्थितियाँ प्रदान कर पाने में सक्षम है, बहुत से देशों में श्रम शक्ति अध्ययन कर्त्ता बताते है कि कम वेतन वाले सेवा क्षेत्र में महिलाओं की संख्या अधिक है और उसके अन्तर्गत बहुत से गैर सरकारी संगठन आते है। यह एक ऐसा कारण हो सकता है जो गैर सरकारी क्षेत्र से उन महिलाओं की अधिक संख्या को स्पष्ट करता है जो आम तौर पर कल्याण के क्षेत्र में आती है।

गैर सरकारी संगठनों के कर्मचारियों के उचित वेतन के सवाल पर एक अन्य बहस भी चली है। जो गैर सरकारी संगठनों और उनके कर्मचारियों के आम तौर पर "पेशेवर होने के सम्बन्ध में है। एक विचार यह है कि उन संगठनों के कर्मचारियों को अन्य क्षेत्रों के कर्मचारियों जितना ही वेतन मिलना चाहिए।

गैर सरकारी संगठनों का कार्य कहीं अधिक कठिन एवं दुष्कर है जितना आम तौर पर माना जाता है। निजी और सार्वजनिक क्षेत्र से इन संगठनों में आने वाले प्रबंधकों और कर्मचारियों की भी यही मान्यता है।

गैर सरकारी संगठनों के प्रबंधकों के प्रशिक्षण को आधिकाधिक रूप सविशिष्ट कार्य माना जाता है कुछ देशों में तो इस कार्य के लिए अभिकरणों का आरम्भ हुआ। अवसर ये अभिकरण भी गैर सरकारी संगठन ही होते है। अधिकाधिक रूप से संगोष्ठी सदस्यों, कार्यकर्त्ताओं और लाभार्थियों को विशिष्ट मानव संसाधन के विकास के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। यह इस मान्यता पर आधारित है कि एक प्रशिक्षित और प्रभावशाली संगोष्ठी का होना उतना ही आवश्यक है जितना योग्य व सक्षम लाभार्थियों का होना।

भलीभाँति प्रशिक्षित और जानकारी रखने वाले कार्यकर्त्ता अपने कर्मचारियों पर अपेक्षाकृत कम निर्भर होते है। वे अपने कमचारियों को पूर्ण रूप से जवाब देही बनाते है। गैर सरकारी संगठनों द्वारा की गई इस मानव संसाधन विकास व प्रशिक्षण सम्बन्धी पहल कदमियों में से कुछ अर्न्तराष्ट्री रूझान वाली पहल कदमियाँ है। कुछ अन्य संगठन गैर सरकारी संगठनों को शोध व परामर्श सेवाएं प्रदान करते है। साथ ही उनके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन भी करते है। इसके अलावा अब अधिकाधिक गैर सरकारी संगठन प्रशिक्षण समय व संसाधन खर्च कर रहे है। उनके पहल सहायता एवं भागीदारी से अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। पर इन सबके बावजूद अवसर ही यह विचार व्यक्त किया जाता है। अभी भी गैर सरकारी संगठन और उनके कोषदाता इस कार्य पर बहुत कम निवेश कर रहे है।

अन्य क्षेत्रों की तरह गैर सरकारी संगठनों में भी मानव संसाधन विकास की शुरूआत सही योग्यता और प्रतिमा वाले कमचारियों को अपनी और आकर्षित करने से होती है।

इसका अर्थ यह है कि वे उचित वेतन और सेवा स्थितियाँ प्रदान कर पाने में सक्षम है, बहुत से देशों में श्रम शक्ति अध्ययन कर्त्ता बताते है कि कम वेतन वाले सेवा क्षेत्र में महिलाओं की संख्या अधिक है और उसके अन्तर्गत बहुत से गैर सरकारी संगठन आते

है। यह एक ऐसा कारण हो सकता है जो गैर सरकारी क्षेत्र से उन महिलाओं की अधिक संख्या को स्पष्ट करता है जो आम तौर पर कल्याण के क्षेत्र में आती है। गैर सरकारी संगठनों के कर्मचारियों के उचित वेतन के सवाल पर एक अन्य बहस भी चली है। जो गैर सरकारी संगठनों और उनके कर्मचारियों के आम तौर पर "पेशेवर होने के सम्बन्ध में है। एक विचार यह है कि उन संगठनों के कर्मचारियों को अन्य क्षेत्रों के कर्मचारियों जितना ही वेतन मिलना चाहिए।

Lecturer

Department of Master of Social Work

Mahatma Jyoti Rao Phool University, Jaipur

संदर्भ सूची

1. कुँवरसिंह तिलारा समाज कार्य सिद्धान्त और व्यवहार सीतापुर लखनऊ
2. अवधेरा पाठक भारत में समाज कल्याण खजूरी बाजार मेनरोड़ इन्दौर
3. प्रो॰ प्रयागदीन मिश्र सामाजिक सामूहिक कार्य उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ
4. अहमद मिर्जा रफीउद्दीन समाज कार्य दर्शन एवं प्रणालियाँ ब्रिटिश बुक डिपो लखनऊ
5. ऐलिजावेथ ए॰ फरगुसन सोशल वर्क जे॰ बी॰ लिपिन काट कम्पनी, न्यूयोर्क
6. गोरे एम॰ एस॰ सोशल वर्क एण्ड सोशल वर्क एडपूकेशन एशिया पब्लिशिंग हाऊस
7. आचर्य राजा राम शास्त्री सोशल वर्क एज ए प्रोफेशस एशिया पब्लिशिंग हाऊस
8. आचार्य राजा राम शास्त्री समाज कार्य लखनऊ
9. डॉ॰ पी॰ डी॰ मिश्र सामाजिक व्यक्तिक सेवा कार्य लखनऊ
10. गिरीश कुमार समाज कार्य के क्षेत्र लखनऊ